बार नेम-टेम करके, शुभ लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा ? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिंदगी भर ताना कौन सहे ? बात-बात में दूसरे टोले के लोग कूट करेंगे—तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथ से....! न, न! पंचायत की इज्जत का सवाल है। दूसरे टोले के लोगों से मत कहिए!

This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4309**

Unique Paper Code : **12057608** **HC**

Name of the Paper : **हिंदी की भाषिक विविधताएँ**

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi CBCS—DSE**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

1. साहित्य और सिनेमा में क्षेत्रीय हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

आरंभिक हिंदी कविता में हिंदी के विविध रूपों को स्पष्ट कीजिए।

2. पाठ्यक्रम में निर्धारित कबीर के पदों का सार लिखिए। 15

अथवा

"अमीर खुसरो की पहेलियाँ समाज के लिए दर्पण का काम करती हैं"—विवेचन कीजिए।

3. बनारसी दास की आत्मकथा 'अर्धकथानक' की विशेषताएँ लिखिए। 15

अथवा

''ग़ालिब एक ऐसे शायर हैं जो समय की सीमाओं की जकड़न को तोड़ते हैं''—विवेचन कीजिए।

4. 'रानी केतनी की कहानी' की संवेदना और शिल्प पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'पंचलैट' कहानी जातीय भेदभाव के बीच सामाजिक समरसता का उदाहरण प्रस्तुत करती है''—कथन को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) बालम आवो हमारे गेह रे।
तुम बिन दुखिया देह रे।
सब कोई कहे तुम्हारी नारी, मोकों लागत लाज रे।
दिल से नहीं दिल लगायो, तब लग कैसा सनेह रे।
अन्न न भावै नींद न आवै, गृह-बर धरै न धीर रे।
कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे।
है कोई ऐसा पर-उपकारी, पिवसों कहै सुनाय रे।
अब तो बेहाल कबीर भयो है, बिन देखे जिव जाय रे॥ 8

अथवा

ये हम जो हिज्र में दीवारो-दर को देखते हैं
कभी सबा को कभी नामाबर को देखते हैं
वो आये घर में हमारे, खुदा की कुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं
नज़र लगे न कहीं उसके दस्तो-बाजू को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख्मे-जिगर को देखते हैं
तेरे जवाहिरे-तरफ़े-कुलह को क्या देखें
हम औजें-तालअ-ए-लालो गुहर को देखते हैं

(ख) कहत सुनत अर्गलपुर बात। रजनी गई भयौ परभात॥
लहि एकंत कंत के पानि। बीस रुपैया दीए आनि॥
ए मैं जोरि धरे थे दाम। आए आज तुम्हारे काम॥
साहिब चिंत न कीज कोइ। पुरुष जिए तो सब कछु होइ॥ 7

अथवा

यह बात नहीं कि गाँव-भर में कोई पंचलैट बालने वाला कोई नहीं। हरेक पंचायत में पंचलैट है, उसके जलाने वाले जानकार हैं। लेकिन सवाल है कि पहली